अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





मनोरन्जन
Enterainment

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अध्याय शीर्षक	मनोरन्जन
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Enterainment**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के **मनोरन्जन** का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वर्तमान में मनोरन्जन के साधन का विषय

सिनेमाहाल

बांदा शहर में 1998 ई तक पांच सिनेमा घर थे जिनके नाम 1 प्रकाश (चौक बाजार), 2 अमर(गूलर नाका), 3 मयूर(छावनी रोड), 4 मल्हार व 5 मृदन्ग कुल पान्च सिनेमाहाल थे लेकिन 2006 तक इसी तक आते–आते केवल तीन सिनेमा हाल बचे इसके बाद सिनेमाघर लगातार घाटे में चलते गए और 2006 में बन्द हो गया। मयूर अब वहां मल्टीप्लेक्स बन चुका है, इसी तरह प्रकाश जो चौक बाजार में था, प्रकाश मल्टीप्लेक्स बन गया है। अमर सिनेमा हॉल जो गूलर नाका में था, अब अमर मल्टीप्लेक्स गूलर नाका बन चुका है। मयूर मल्टीप्लेक्स छावनी रोड बन चुका है। यह निश्चित है कि रात के 12/01 बजे तक चलने वाले सिनेमा हॉल के कारण बहुत से लोगों की रोजी–रोटी बनी हुई थी विशेषतः स्नेक्स चाय, समोसा, पान बीड़ी सिगरेट की दुकानें बहुत चला करती थी। सिनेमा हॉल बंद होने पर यह भी बन्द हो गए निश्चित रूप से अब इनका जो रोजगार है वह केवल सुबह 11:00 बजे जब आसपास के गान्व के लोग बान्दा पहुन्चते हैं, से शुरू होता है और शाम 5:00 बजे तक अर्थात बाहर से आए लोग जो खरीदारी कर चुके होते हैं करने के बाद चले जाते हैं और इनका कारोबार लगभग बन्द हो जाता है केवल बान्दा के लोग इतने सारे दुकानदारों से क्या खरीद पाएंगे?

कवि सम्मेलन

कवि सम्मेलन मिलन केवल कवि और कवि ही आमन्त्रित होते हैं और उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं बाकी सामान्य लोगों को उसकी भनक तक नहीं पड़ती। इसी तरह शायर लोग भी चुपचाप अपना मजमा इकट्ठा करते हैं और ब–मुश्किल 20 से 25 लोग ही वहां इकट्ठे होते हैं, सामान्य जनता को नहीं बुलाया जाता। एक प्रतिष्ठित अखबार अमर उजाला एक सुविधा देता है कि आपके शहर में जो भी सान्सकृतिक कार्यक्रम होते हैं उनकी सूचना प्रदर्शित की जा सकती है लेकिन उसमें भी इन सब चीजों की सूचना उस हद तक नहीं मिलती जिस हद तक मिलनी चाहिए दो या चार पर्सेंट लोग ही अपना सूचना देते हैं। बान्दा में दो रामलीला मैदान है जिन्हें अनाधिकृत कब्जा करके लगभग लगभग खत्म कर दिया गया है और केवल रामलीला के समय ही अगर कोई कार्यक्रम होता है तो हो। एक रामलीला मैदान महेश्वरी देवी मन्दिर के पास में है जो कार पार्किंग बन चुकी है दूसरा चित्रकूट जाते हुए बान्दा में ही उपस्थित है। अन्य मनोरन्जन के कार्यक्रम दीपावली में दीवारी दशहरा नवरात्रि में सड़कों के किनारे लगाए गए पन्डाल होते हैं। शाम के वक्त लोग भ्रमण कर धार्मिक उन्माद को शान्त करते हैं और आनन्द की प्राप्ति करते हैं।

धार्मिक कार्यक्रम

बुन्देलखण्ड धार्मिक स्थान है। बान्दा में सबसे ज्यादा धार्मिक कार्यक्रम होते हैं जिनमें भागवत् कथा प्रमुख है इसके अलावा व्यक्तिगत रूप से भी लोग कार्यक्रम करते हैं। इन कार्यक्रमों में बहुत ज्यादा भीड़ एकत्रित होती है। मन्दिरों में भी विभिन्न अवसरों पर कार्यक्रम होते रहते हैं जैसे– संकट मोचन मन्दिर में रोजाना कोई ना कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम या धार्मिक कार्यक्रम होता ही रहता है आजकल एक नई प्रथा शुरू हुई है कि हर व्यक्ति, वकील, अपने कवि सम्मेलन अन्य दूसरे कवि सम्मेलन करते रहते हैं। अधिवक्ता कवि सम्मेलन की तरह के अन्य लोग भी तरह–तरह के कार्यक्रम करते रहते हैं लेकिन उसमें गिने चुने लोग भी पहुंचते हैं क्योंकि उनका बहुत ज्यादा प्रचार प्रसार नहीं किया जाता।

लोक कला

पुराने समय की आल्हा, दिवारी, होली गायन, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक सन्गीत, लोक गल्प आदि लगभग लगभग समाप्त हो चुका है। सभी अपने–अपने कार्यक्रमों में व्यस्त हैं।

नौटन्की

नौटन्की का अस्तित्व खत्म ही है।

मनोरन्जन **Enterainment**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मनोरन्जन **Enterainment**